

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

ग्रंथ नाम



४८ पु ११५ (पुण्ड)

मविजय.

विषय

कथा-पुराणे.

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ अथ वेदोत्सर्जनप्रारम्भः॥ केशवा० रोम्॥ श्रीमहा
गणपतये नमः॥ सुमुखश्चै० प्राप्त्यर्थं ज्ञातानां छंदसामध्येष्यमा
णानां च अस्थानोद्यासादिजनितया त्रयामतानिरासेनाप्यायन
द्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं रत्नब्रीह्यैः सह वेदोत्सर्जनारव्यं कर्म
करिष्ये॥ तदंगंगणपतिरुज्ज्वलकरिष्ये॥ मङ्गलं



॥ श्रीगामविजयये श्रीप्रथमाध्यायप्रारंभाः श्रीरामवद्रमुर्तेये नमः ॥



(3)

श्रीमहागणाधिपति ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकुब्जदेवते नमः ॥
 श्रीशिलाकान्ताय नमः ॥ श्रीमद्विष्णुपुराणपुराण ॥ श्रीमद्विष्णुपुराण ॥ दिङ्गवराज ॥
 विनाश ॥ ब्रह्मन्दाजगद्गुरु ॥ जयजयजगद्गद्यापुर्णब्रह्म ॥ अजअजितभात्म
 यारामा ॥ निकृष्टवहृदयविश्रामा ॥ पुर्णानन्दपरात्परा ॥ २ ॥ जयजयमायाचक्रचा
 कका ॥ मायातिताविरंचिजनका ॥ सकलचित्तपरिक्षका ॥ निजजनरक्षवासुखा
 ध्वि ॥ ३ ॥ कमलाक्षवैकुण्ठकर्पूरगौर ॥ त्रैलोक्यगजवदनदिवाकर ॥ इन्द्रपतेर्विसा
 चार ॥ तुनिर्विकारसर्वदश ॥ ४ ॥ मंगलकारकगजवदन ॥ मंगलारंभितुल्यचामन ॥ १११ ॥
 मंगलजननिविरकितालेखन ॥ तुष्टेगुणनसरति ॥ ५ ॥ रातोत्पलसकुमासहुत ॥
 प्रपदगौरनेपुंरसहित ॥ वांकिरुणमुणावाजत ॥ ६ ॥ ध्यातिभक्तहृदयाज ॥ ६ ॥ विरार्ण

(3)

(3A)

वधति चेतो वर॥ किंकासेकाशिलाक्षीरसागर॥ किनिर्दीषयशपवित्र॥ सने
सपेंआकारला॥७॥ अरुणासंध्या रागमिषित॥ तैशिउटिदिसेआरक्त॥ किंदाच
कसिंदुरेचर्चित॥ चारिहस्तं विराड्यति॥ दाभनं चामनो वारणभनिवार॥ न्वरे
चिकदंसाचार॥ लोआकर्षवया निर्भार॥ विवेकअंकुशधरियेला॥१॥ भावोण र
यतिअज्ञानजन॥ त्यांचेछेदायया अविद्याविपिन॥ यालागिंउर्ध्वपरशश्चन॥
शिथगजाननसर्वदा॥१०॥ हातिअवकलकाकमक॥ डोआम्लाननविदार्यका
क॥ तेणेपुजुंईछीप्रिमत्तप्रेमक॥ डोका निर्मळअतर्बाह्य॥११॥ डोसेकलमोरविजो
चेउमाक॥ तैसेअकंकारअंगिमिरवेल॥ नक्षत्रपुंजगुणिवोविले॥ तेविमुक्तहा
रजेलति॥१२॥ हृदयआकाशिसुरेख॥ पदकजालातोमृगांक॥ क्षयरहितनिःक

बंक॥ निजसुखेंसुरवाडला॥१३॥ अता शिविहंयेतिप्रचंड॥ तेआककिसुंडादेश॥ कल्ला
 तविजुचेनियोडें॥ येकदंतशककतसे॥१४॥ दिग्गजचक्रिंतेजनमाये॥ तैशिकुंडलें
 शककतिमणिमये॥ किंवासुर्यआणिचंद्र॥ कुंडलेंरपेंतकपति॥१५॥ मुगुत्तिळके
 रत्नकळा॥ तेणेनभमंडपउजकला॥ आदिपुण्यसाकारला॥ वरदानद्याव्याकवि
 तें॥१६॥ दैसामाहाराजश्रीगजवदना॥ वरदहस्तदाविचिक्क॥ करिरामकाविज
 निरोपण॥ त्याशिजिवनघालिनमि॥१७॥ जैसाउगवतावरदचंद्र॥ तेणेंउरुसे
 कविहृदयसमुद्र॥ साहित्येंभरतेबपारा॥ असभाब्यदाटलें॥१८॥ जयजयाजव
 दनानिरोपमा॥ अगाधनवर्णवेलुशर्महिमा॥ नुझेगुणाचिपावावयाशिमा॥ कैसा
 सरताहोईनमि॥१९॥ कारखेशिमेरघेउनेदरवा॥ कैशिबल्यकरिलपिःपलिका॥ कैसे

(५४)

॥ ३॥

ब्रह्मांड उचले मध्यका ॥ शुभोक्त मध्यक के विहा लवि ॥ २० ॥ चंद्राशिकर्पु राचें उदणे ॥ वास
 रमणि सद्वर्षणि दावणे ॥ हिमनगाशि वारा घालणे ॥ मेघाशि अर्पणे उदकां जुंकि ॥ २१ ॥ सु
 रतरपुटे टेविजे वद्विफक ॥ मक्या नकाशि शुभ परिमळ ॥ कामधेनु सीतल मुष्क कवळ ॥
 आणे नियां समर्पिला ॥ २२ ॥ क्षीरमिथु सज्जताक्षिरा ॥ कनकादि पुदं जे विगार ॥ तैसे
 प्राकृत बोलणे अपार ॥ तुझे महत्त्व के विवधु ॥ २३ ॥ परिजोळंदेवत बाळक ॥ तो श्रेष्ठ
 करुनि पुरविजनक ॥ तरि हाराम विनय सरस्व ॥ सिध्दी पावोत वक्रुये ॥ २४ ॥ आतां ॥ ३॥
 नमुंजळ जो द्विबकुमारि ॥ जे विलसे सदा कवि जिह्वाग्रि ॥ जिन्या वरें दे मुके हि करि ॥
 वाचस्पति शिंसे वादा ॥ २५ ॥ जे आनंद सरोवर मराठिका ॥ जे चातुर्य चंपक कळिका ॥
 जे निज क्रयेचि करुन नौका ॥ कवि बाळणें नेत परति राशि पै ॥ २६ ॥ तुझे क्रयेने विरंचि

कुमारि॥ जन्मांध होय माहं जो हरि॥ अति मुद वेदार्थ करि॥ शक्रपदि बैसे पैरं क॥ २७॥
अंबेतुंक विहृदया डब जभ्र मरि॥ किं निजानंद सागरिं चिलहरि॥ वागवलि तु बैस जि
कामि॥ विरदे सुफळ सर्वदं॥ २८॥ विवेक हंस शुद्ध धवला॥ त्यावरितु जें आसन
अचळ॥ तय कोच न सुटाळ॥ तैसे निर्मळ निजोग तु जें॥ २९॥ शुभ्र कंचुकि शुभ्र अं
वर॥ दिव्य मुकल गळ अळंकार॥ निज बस विद्या सुखर॥ गायन करि स्थानंद॥ ३०॥ जै
कतां शारदे चंगा येन॥ तमय विधि विरुद्धान॥ अंबेतु जें सौंदर्य पाहोन॥ मिन केत
न तटस्त॥ ३१॥ रंभा उर्वशितिको तमा॥ सावित्री अपर्णा आणिरमा॥ तुझ्याचा तुर्याशि
मा॥ त्या हि कदां पै न पावति॥ ३२॥ अंबेतु जें गुण के विवर्णवे॥ कवि अर्काशि अर्किपु
ष्पि पुजावे॥ अंबर कैसे मुहिति सांठवे॥ पल्लवि बांधवे वायु कैसा॥ ३३॥ न करवे उर्व

॥२॥

चेंवजन॥ नगणवेसिभुचेंजिवन॥ सत्पवर्णसेदुन॥ मय्यककेविजाउंशके॥ ३४॥ जैकोन
 बाळकाचेंवचन॥ जननिधिरिहृदईप्रीतिने॥ तैसेसरस्वतिनेनिजकपेने॥ घातलेटाणे
 जिह्वाणि॥ ३५॥ माझेमनपुढेचकार॥ कुहुमाजिईछिरोहिणिवर॥ परिसरस्वतिकुपा
 कथार॥ शुद्धविप्रगटलि॥ ३६॥ विजेप्रासुनचउयाकळा॥ तोंतांचकोराससोहळा॥ तें
 शिचयेथेंरघुनाथलिका॥ चढेआगवसुनेदुटे॥ ३७॥ ज्ञानाचेअनंतजोळे॥ उघडले
 पकचवेळे॥ आतांबहुंश्रीगुरुचिपाउलें॥ जिन्यनप्रघटलेंदिव्यज्ञाने॥ ३८॥ जोआज्ञानवि
 मिरछेदक॥ जोप्रघटेवैदांतज्ञानाके॥ तोअज्ञानंदमाहंराजदेख॥ परमाहुतमहिझा
 च्या॥ ३९॥ जोपांडुरंगनगरविख्यात॥ जोभक्तभिमातटिसमाधिस्त॥ तोयतिरामहिमाअ
 हुत॥ कवणवर्णुंशेकेठपै॥ ४०॥ जागृतिस्वप्नशुभ्रपीतुर्यापूर्ण॥ चहुंवस्त्रावरिझाचे

(6)

॥४॥

वासन॥ उन्मनिहि निरसुन॥ स्वसुखिं पुर्णसमाधिस्त॥ १९॥ चादणें कैचैनसतां मृगांक॥ कीर्ण
कैचिनउगवतां अर्क॥ डिवना वाचुन बिज्ञदेख॥ सहसा अंकुरफुटेना॥ १९॥ जारिनेत्रे विणदि
सेषदार्थ॥ जारिमंथैने विण निबडनवनिता॥ तारिसहुर वाचुन पदार्थ॥ टाईन पडे डिवाशि॥ १९॥
वरनसतां अधिवरुड॥ शीरनसता कायसेधड॥ तैसैंगुरकुपे विनकावाड॥ तपेरुते साधने॥ १९॥
मंडने विणसां पडे ना निधान॥ कीगाई त्रि कोमल अणपण॥ शिमाकै चित्रा मा विण॥ तैसैंगुररु
पे विण ज्ञान नघडे॥ १९॥ ह्रणो नितनु मनथ तै वि अनन्य॥ ब्रह्मां नंदस्यामिस शरण॥ आरंभें श्री
रामकथा गहन॥ ग्रंथसं पुर्णसीधो पावे॥ १९॥ तैसै एकतां सत्रेम बोला॥ बोलिला श्रीगुरु
दयाळा॥ चकोरा कारणे उतावेळा॥ मृगांक जैसा उगवे॥ १९॥ किंचात्त काला गिंधांवे जळ
र॥ किंहुथी तापुदें ये क्षिरसागर॥ किंक पुरुक्षा आला शेधितघर॥ दरिद्रायाचा सांक्षेपें॥ १९॥

तैसा श्री गुरु दया सागर ॥ तेणें दिथ ला अक्षई वर ॥ ह्मणे सिधिया वे लसाचार ॥ राम वि
 जय ग्रंथ हा ॥ ४९ ॥ आतां वंदु संत जन ॥ जे वैराग्य वनिचे पंथ्या नन ॥ किं ज्ञाना वरि
 चे चंड किर्ण ॥ उदय अस्त नसे जया ॥ ५० ॥ जे भक्त सरो वरिंचें राज हंस ॥ जे को अ
 विद्यारण हुतां श ॥ किं ते पद्म हस्ति विंश ॥ जे वैद्य रोग हारक जे ॥ ५१ ॥ किं दैवि
 संपत्तिचे आग्य वंत ॥ मुमुक्षा कारि लिखि दरहित ॥ किं ते देयेचे अद्भुत ॥ गोपुरें काय
 उचावलिं ॥ ५२ ॥ किं जिव पावे आपुल्य संपदा शि ॥ बैसा सुमुहुर्त देणारे ते जो रा
 शि ॥ किं ते पंथ्याक्षरि श्व प्रतापें शि ॥ यच्च भुता शि पा लवि जे ॥ ५३ ॥ संत श्रोतेच तुरपें
 डित ॥ माझे बोलणें बारष बहुत ॥ जे ससरस्वति पुढें मुढ असेत ॥ वाग्मी ला सदा विल
 से ॥ ५४ ॥ सुर्या पुढें जे सादीपक देख ॥ जाळु विसळाणि थिल रोदक ॥ किं कनकाद्रि

(७)

॥५॥

सुरेस्व॥ त्यास अकंकार पितकेचे॥५५॥ कामधेनुससमर्पिलें अजाहिर॥ किंनवडा
 शिशितक करिरंभापुत्र॥ कलूतसकफिलें देणार॥ त्यास निंबोक्रियासमर्पिल्या॥५६॥
 रत्नाकराशिकांन्यनमणिसमर्पिला॥ तेशिमाशिआर्षबोली॥ परितुह्निप्रितव
 रुटेविली॥ प्राद्युतशब्दीनबलेहं॥५७॥ विदुशिभुषणंअपार॥ परितुकशिवरिप्रित
 फार॥ किंअपर्णापतिसवित्वपत्र॥५८॥ वरिदिविशेष॥५९॥ रायेंदाशिसपथिशि टि
 घालिता॥ तिचिसर्वावरिचालेसता॥ मोलथाडेंप्रभुअकंकारलेता॥ जनासम ॥५॥
 स्ताथोरदिसे॥६०॥ ह्मणोनितुह्निं सतप्रभुथार॥ महिमानवर्णबेअपार॥ बांध
 बेलमोटेतसमिर॥ चरणिंअंबरछमबेलपें॥६१॥ गणवतिप्रश्नीचेरजःकण॥
 मोजवेरुसिंधुचेडिवन॥ कनकाद्रिचाचेडुकरन॥ उडविलेंजेंसर्वथां॥६२॥ मो

भोगेद्रमस्तकिंचामणि॥ आणवे लयेरवादेक्षणि॥ सुर्यजातां धरवेगगनि॥ नक्षत्रेणु
 णिवो विजेति॥ ६२॥ कठिजे लशशि मंडक बं मृत॥ मोडवे लखेरावतिचादंत॥ दि
 गज आणुन समस्त॥ ये के ठाई बांधी जेति॥ ६३॥ तुरग कर निप्रमंजन॥ करवे ल
 सर्वत्र गमन॥ परि न के के संताचे महिमान॥ जे ब्रह्मानंदे पुर्ण सदा॥ ६४॥ तों संत
 बोलति आनंद धन॥ मन निवाले वेतने काव॥ आहि ईछितें राम कथा अकृप॥
 वरि दृष्टं त गोड तुझे॥ ६५॥ मेर सुंदर रत्न करन॥ किं नक्षत्रे मंडित गगन॥ किं रक्षक
 किं पुर्ण॥ दृष्टं ते पुर्ण ग्रंथ शोभे॥ ६६॥ किं शांति क्षमा दया विशेष॥ तेषां मंडित समु
 त्तम॥ किं परिवारे शीत रेखा॥ दृष्टं ते सुरस ग्रंथ ते सा॥ ६७॥ आधि च भुक्ता ग
 लि बहुत॥ आहि वरि वाढिले पंथ्या मत॥ कि दुर्बळा शिब कस्मात्॥ कल्मत

④

॥६॥

रभेटका ॥६८॥ काव्यार्थिहिं उतां भुमंडक ॥ त्याशि राजकन्याचा लिमाक ॥ किं रोणि
या सरसायण निर्मक ॥ अकस्मात जोडले ॥६९॥ आतां बहुत टाको नशद जाक ॥
बोलें रामकथा साक ॥ जैशि शिकतां सांडुन मराक ॥ मुकाफकचि शेविति ॥७०॥
किं कोशग्रहिं प्रवेशोनि ॥ भांडारि लेका दिनि बहुनि ॥ किं दोषटाकून सजनि ॥ उत्त
मगुण श्विकारिजे ॥७१॥ **जैसे संतं चेंवो कपारकर ॥ जैकोनि ब्रह्मानंदे श्रीधर ॥ साष्टां**
गचा लिन मस्कार ॥ हृणें सादर परिशिडे ॥७२॥ असंभाव्य श्रीरामाचें चरित्र ॥ शतको ॥६॥
टिग्रंथ सविस्तर ॥ वात्मीक बोलिले निरास ॥ कथा समुद्र जगम्य ॥७३॥ जो सत्यव
ति हृदयरत्न ॥ कथिजे सद्गुरु पाराशरनेदन ॥ तें व्यासाकरा मायण ॥ कोणासं पुणें
वर्णवे ॥७४॥ वशिष्ठें कथिले निश्चीति ॥ तेवशिष्टरा मायण हृणति भुके कथिले ना

(४५)

नारिति॥ शुक्ररामायण बोलतितें॥ ७५॥ जो बंज निहृदयार बिंदुत्र मर॥ तें पाहो
 निश्चिरामचरित्र॥ कथिनाटकरामायण साधार॥ अपारचरित्र निज मुखें॥ ७६॥
 जो परमविश्वाशि श्रीरामाशि शरण॥ शक्रादि जनकबंधु विमिषण॥ तें परामच
 रित्र कथिलें पुर्ण॥ विमिषण रामायण त्या संप्रणति॥ ७७॥ जो कमळे इव विलुसु
 त॥ तें नारदाशिकथिलें हंचरित्र॥ तें प्रवरामायण अद्भुत॥ उमससों गतिशि
 वरामायण॥ ७८॥ जो कमळे इव मासुनि॥ जो जळकथी आटिला आचमनि॥
 तें परामकथाटे विलिविस्तारनि॥ अगस्त्यरामायण ह्मणतितें॥ ७९॥ भोगेद्रक
 थिसर्पा प्रति॥ तें शेषरामायण बोलतितें॥ अध्यात्मरामायण समस्तों॥ ऋषीनि
 निवडुन काढिलें॥ ८०॥ येकशैवरामाणासस॥ आगमरामायण येक बोलत॥ कुर्म

९

रामायण अद्भुत ॥ कर्मपुराणि बोलिलि ॥ ८१ ॥ स्कंद रामायण अपार ॥ येक पौलस्ति
 रामायण परिकर ॥ काविका खंडि सविस्तर ॥ राम कथा कथियेलि ॥ ८२ ॥ रवि वर
 ण सेवाद ॥ ते अरुण रामायण प्रसिद्ध ॥ पद्म पुराणि अगाध ॥ पद्म रामायण वर्ण
 ले ॥ ८३ ॥ भरथ रामायण चागले ॥ यक धर्म रामायण बोलिले ॥ आश्चर्य रामाय
 ण कथिले ॥ बक दाल्म्य रुषि प्रति ॥ ८४ ॥ कापा सुनई तव्या कथा ॥ कैशा वर्ण
 वतिल तत्वतां ॥ त्या माजि वाल्मीकि नाटका धारें ग्रंथ ॥ राम विजया लागि कथुं ॥ ८५ ॥
 समस्त कवि सनमस्कार ॥ जो जगदुत्तम आचार्य शंकर ॥ जनम ते उछेदुन सम
 ग्र ॥ शुद्ध मार्ग वाट विरो ॥ ८६ ॥ पुर्विय कसल्य बलिकुमर ॥ ते साकल्यु गि श्री
 शंकर ॥ जो ज्ञानाचा समुद्र ॥ जगदो ध्यास्के लाजेणें ॥ ८७ ॥ सकल मतें उछेदुन ॥

सन्मार्गवाठविलापुर्ण॥ सकळमतवादि जंबुक जाण॥ शंकरसिंको गजतसे॥ ८८॥
 सकळमतवादि हरिद्रि॥ शंकर श्रीमंत प्रथ्वी वरि॥ संन्यासदिक्षा निर्धारि॥
 जेणे स्थापिलिविधीयुक्त॥ ८९॥ अवयवे मंतवादि निशान्तर॥ शंकर सावरि श्री
 रघु विर॥ किं कौरव वधी यादवेद्र॥ अति उदित साक्षेपे॥ ९०॥ तैसा शंकराचा
 र्या सकळ॥ कुमते छेदिता काळ॥ वाचाचार्याचे पदक मळ॥ श्रीधर १३ मरे
 वंदिले॥ ९१॥ श्रीधराचार्यादिका वारा॥ त्यासनमस्कारित श्रीधर॥ मधुसुने
 दिक्विंद॥ ग्रंथ अपार जयांचे॥ ९२॥ जगद्गारव निचा विहंगम जाण॥ जो
 ज्ञये देवपद्मावतिरमण॥ जाचिका व्यंकटापा होन॥ पंडित जनतटस्ती॥ ९३॥
 जो वेदं तक्षिरार्णविंचामीन॥ जेणे विवेकसिंधु निर्मिला पुर्ण॥ तो मुकुंदरा

(१०)

॥९॥

जगुणनिधान॥ तथाचेचरणवेदिले॥१५॥ लारावयाजनसमग्र॥ पुनः अवतरलार
मन्ववर॥ गितार्थकेलासाचार॥ तोज्ञानेश्वरजगदुस॥१५॥ जोभानुदासकुळभु
षण॥ अतिष्ठनवासिपरिपूर्ण॥ त्यायकनार्थेग्रंथसंपूर्ण॥ बहुसालकथिये
ले॥१६॥ जोचातुर्यराजनिधीचाककस॥ मुक्तेश्वरमुकुलदास॥ जोचेग्रं
थपाहानांविशेष॥ ब्रह्मनिदुर्लभके॥१७॥ जैसंचंडाशतेजव्योमि॥ तैसा
चकेवकवामनस्वामि॥ जाचिक्लोकरचनायासुमि॥ मंडकावरिष्मपुर्व॥१८॥
सुहृदासजयराम॥ जेंशांतिदयेचनिजधाम॥ ज्ञानेग्रंथज्ञानभरितपर
म॥ जेनिः श्रीमब्रह्मचारि॥१९॥ श्रीरामउपासककेवक॥ जोभक्तसरोवारीचा
मराक॥ तोरामदासमाहाराजनिर्मक॥ भक्तप्रेमकलाविजना॥१००॥१६॥

ब्रह्म नंद स्वामि वावधु सत्य ॥ नाम त्याचें रंगनाथ ॥ ज्ञाने कवितेनें समस्त ॥ अपार
 जन उद्धरले ॥ १॥ आतां असोत कविवर ॥ अवधे ब्रह्म नंद रूपसार ॥ त्यास अनेक
 रूप सार ॥ श्रीधर ॥ द्यावावर ग्रंथाशि ॥ २॥ विनु विं अवतरो नरधुवि ॥ कैसें के
 ले लिकाचरित्र ॥ धन्य त्यावाली काचें वस्तु ॥ कथा अपार बोलिला ॥ ३॥ हेवर्ण
 तां श्रीरामचरित्र ॥ तरलावाल्मीक संचार ॥ पाप आचरला अपार ॥ जैकासा
 दर ओते हो ॥ ४॥ वाल्मीक मुर्विदि जमुत ॥ त्याजुन आपला आचार यज्ञोप
 वित ॥ किरात संगे वाट पाडित ॥ अति उन्नत विषय ध ॥ ५॥ माहादुर्धर का
 नन ॥ देखतां भयामित होय मन ॥ पर्वत दरि माझि स्थळ करून ॥ सह परिव
 रे वसे तेथें ॥ ६॥ भोंवतें द्वादश गावें परियंत ॥ पालथि नारखो न वाट पाडित ॥ के

(11)

॥११॥

ल्याब्रह्महत्या असंख्यात ॥ नाहिं गणित ईतर जिवं ॥ ७ ॥ मधुधरावथारुणि
वक ॥ बैसे होउनि सा लीक ॥ किं मुषका रुणि विडाकक ॥ बैसे जपत जथा
परि ॥ ८ ॥ किं अंग संकोच पारधि ॥ जपे नितात्का कम गवधि ॥ तैसा वा ल्मी
क जिव वधि ॥ पाप निधि निदिय ॥ ९ ॥ अपार जिव मारिले ॥ पापाचे पर्वत सां
चले ॥ जैसे अत्यंत ग्रहा भोंवत पडले ॥ दिग बहुत अस्तींचे ॥ १११॥ ऐसें पै
क तां पापाचरण ॥ तथा शिवाले वध ॥ पुत्र जा लाभ तितरुणा ॥ परिआं ॥ ११० ॥
गवण न सोडि ॥ १११ ॥ हातिं शस्त्रे च उन्नतान् ॥ मार्ग रक्षित जां बैसला ॥
तां अकस्मात् नारद प्रघटला ॥ पुर्व पुण्ये करो नियां ॥ ११२ ॥ चद्रवेष्टित नक्ष
त्रे जैशि ॥ भोंवतिं ऋषि मांदि तैशीं ॥ तों पालथि सांगति वान्हे याशि ॥ जाति



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com